गुरुदेवाय स्वाहा

गायत्री मंत्र प्राप्त हुए हैं, गायत्री भी अगर हम कर रहे हैं, गायत्री मंत्र में यदि सिद्धि ही नहीं मिली, तो क्या भगवद् प्राप्ति होगी? गायत्री मंत्र सही तरह करने की... और गायत्री का जो पहला मंत्र है, आज मैं उसी के context में इसी को relate कर रहा था...

"K.L.I.M गुरुदेवाय स्वाहा"

इसका मतलब क्या है? "मैं स्वयं को गुरुदेव की सेवा में नियुक्त करता हूँ।" यह सुनने में कितना सरल मंत्र है न? हम फटाफट दस (१०) बारी कर देते हैं। यह कितना deep है यह मंत्र। "मैं स्वयं को गुरुदेव की सेवा में नियुक्त करता हूँ।"

अब इसके अंदर बहुत प्रश्न उठ जाते हैं। आप अपने को कितने रूप में नियुक्त करते हो? पूर्ण रूप में या कोई percentage है? आप अपने आप को गुरु की सेवा में नियुक्त कर रहे हो, ठीक है, तो प्रश्न है कि आप अपने आप को अर्पण कर रहे हो या अपने आप को समर्पण कर रहे हो? जैसे कि मान लो, कि मान लो कि वासुदेव की property है बीस (२०) करोड़ की, ठीक है जी..., अब आप पाँच (५) लाख दे रहे हो, तो क्या कर रहे हो? अर्पण कर रहे हो, समर्पण नहीं कर रहे। तो प्रश्न यह उठता है कि मैं अपने आप को गुरु की सेवा में नियुक्त कर रहा हूँ, तो मैं अपने आप को गुरु की सेवा में अर्पण कर रहा हूँ या समर्पण कर रहा हूँ?

समर्पण का मतलब होता है- सम्यक् रूप से अर्पण। Totally अर्पण कर देना।

"K.L.I.M गुरुदेवाय स्वाहा"

तो मैं स्वाहा करता हूँ अपने आप को, सेवा में नियुक्त करता हूँ। कब के लिए? हमेशा के लिए। वे हमारे सनातन गुरु हैं अगर, तो सनातन गुरु की सेवा, मैं अगर यहाँ नहीं कर रहा, यहाँ मेरी करने का लौलयम् नहीं है, तो धाम में कैसे मैं करूँगा उनकी सेवा, वो भी अनादिकाल के लिए? मेरा यहाँ ही प्रेम नहीं है उनकी सेवा करने का।

तो प्रश्न उठता है- कि partly या fully अपने आप को मैं सेवा में नियुक्त करता हूँ? फिर प्रश्न उठता है- कितना percent नियुक्त करता हूँ? कितना percent मैं नियुक्त कर रहा हूँ- यह हम अपने आप को पूछेंगे। रोज़ मंत्र करते हैं, मन में ज़रूर आएगा- मैं कर रहा हूँ या नहीं। अगर आ गया नहीं कर रहा हूँ अगर, तो फिर मैं कितना percent कर रही हूँ और कितना percent नहीं कर रहा हूँ?

पहला question है partly या fully...। यह तो समझ आ गया, partly हो गया थोड़ा बहुत। पहले तो यह answer ही गलत है, कि partly हूँ, तो मैं खुश हूँ, मुझे रोना चाहिए। मंत्र सिद्धि कैसे होगी, जब मैं बोल ही रहा हूँ, partly हो रहा है काम। मंत्र सिद्धि ही नहीं हो सकती उसकी, सिद्धि कहाँ से होगी? नियुक्त कर रहा हूँ, थोड़ा सा कर रहा हूँ, तो सिद्धि नहीं होगी। ठीक है partly है। अच्छा फिर इसका और detail में जाएँ, तो मैं अपने आप को सेवा में नियुक्त कर रहा हूँ - "हे गुरुदेव, मैं अपने आप को, अपने आप को, मेरे पास मेरा तन-मन-धन है।" तो किस-किस से अपने आप को सेवा में नियुक्त कर रहे हो? धन से कर देता हूँ थोड़ा; तन तो बच्चों के लिए है; मन तो स्त्रियों में जाएगा, घर में जाएगा; तन को थोड़ा बहुत कर देता हूँ, थोड़ा सा। व्यक्ति यह कहता है, "भई, सब कुछ ले लो, मुझे मत लो। धन ले लो मुझ से," धन का देना वास्तव में देना ही नहीं है कुछ। धन क्या होता है, धन क्या होता है? धन से तो आपका क्या...। स्वयं को देना, मन को देना। मन जाएगा, तो तन-धन सब चला जाएगा। Main है मन कहाँ है? अमृत बिन्दु उपनिषद् में,

"मन एव मनुष्यानाम् कारणम् बन्धनम् मोक्ष्यः"

मन ही कारण है बंधन का व मोक्ष का ।

तन, मन और धन से अपने आप को गुरुदेव की सेवा में नियुक्त करना है। सम्यक् रूप से करना है और सम्यक् रूप में से किस-किस को करना है? तन को भी, मन को भी और धन को भी और वो भी सम्यक्। अच्छा धन को करता हूँ, कितना? २५%, बाकि ७५%..., और मन को और तन को? तो मंत्र बोलने से थोड़ी न..., हम बोलते हैं, हमारा मंत्र सफल नहीं हो रहा, होगा कैसे? हम कर ही नहीं रहे मंत्र, कोई..., कोई artificial activity है मंत्र करना, बोलना क्या?

जब हमें गुरु मंत्र देते हैं, तो कृष्ण हमारे भीतर कान के माध्यम से मंत्र के रूप में कृष्ण ही प्रवेश करते हैं। कृष्ण मंत्र के रूप में प्रवेश करके हमारे मन को, इन्द्रियों को spiritualise कर देते हैं। देह को भी। तभी वो भगवान् की सेवा कर सकता है। Spirit is only served by Spirit... तो गुरु की कृपा से जब हमें मंत्र प्राप्त होते हैं, तो देह, इन्द्रियाँ सब चिन्मय हो जाता है। और चिन्मय चीज़ को हम भौतिक रूप से use करना शुरु कर देंगे, तो दण्ड तो मिलेगा न। गुरु ने दीक्षा किसलिए दी? भगवद् सेवा में नियुक्त होने के लिए। कब? हमेशा के लिए। तो निजी इन्द्रिय तृप्ति की सेवा कैसे कर

सकते हैं? अपनी, अपने बाप-माँ की, भाई-बहन की, पत्नी, बच्चों वगैरह की? गुरु, भगवान् ने दिए हैं मंत्र, भगवान् ही मंत्र के रूप में प्रवेश कर रहे हैं।

अच्छा ! मैं अपने आप को गुरु के, K.L.I.M गुरुदेवाय स्वाहा। मैं अपने आप को गुरुदेव की सेवा में नियुक्त करता हूँ। किस-किस से? Mind, body and words..., यह भी प्रश्न उठता है। तन-मन-धन तो आया..., और detail में जाएँ अगर, तो mind, body और words..., body का तो तन आ गया, words... बोलते हम कितना फालतू हैं। तो इसमें कितना गुरुदेव की सेवा में, मेरे शब्दों को मैंने नियुक्त किया है? और एक phrase तो हम जानते ही हैं- सेवा में नियुक्त होने से ही शान्ति मिलेगी, सुख मिलेगा। As the saying goes,

"Surrender means Peaceful Life"

And Surrender should be 100 %, तभी 100 % peace होगा।

और वैसे ही,

"एकले ईश्वर कृष्ण, आर सब भृत्य।
यार यैछे नाचाय तार तैछे करे नृत्य।।"
(श्री श्री चैतन्य चरितामृत आदि लीला ५.१४२)

जैसे नचाओगे..., नाचेंगे।
गुरुजी जैसे चाहते हैं, वैसे नाचेंगे।

हम सारी चीज़े जो कर रहे हैं, साधन-भजन, हम सब साधन-भजन करने की कोशिश कर रहे हैं। साधन-भजन करके हम क्या प्राप्त करना चाहते हैं? हम भगवान् की कृपा प्राप्त करना चाहते हैं। अच्छा, भगवान् की सबसे विशेष कृपा कैसे होती है? जब हम विशेष रूप से गुरु की सेवा करते हैं। देखिए, यह होती है..., विशेष सेवा गुरु की होती है, उसे कहा जाता है-- "वैशिष्ट्यलिप्सु", कि जिसमें प्रधान अंग, जो main, primary हमारी भक्ति होती है- वो गुरु की सेवा होती है और secondary हो जाता है, भगवान् राधारानी का, महाप्रभु का श्रवण-कीर्तन-स्मरण इत्यादि करना। यह होती है वैशिष्ट्यलिप्सु सेवा। जिसमें गुरु की सेवा primary importance होती है और साथ में भगवान् का श्रवण, कीर्तन इत्यादि। एक होती है सामान्य गुरु सेवा, इसमें क्या होता है? भगवान् का primary श्रवण, कीर्तन, स्मरण, अर्चन और secondary होता है- गुरुजी का मानना और वह सब करना, वह secondary होता है।

तो हमको देखना चाहिए हम कौन से स्तर, हम कौन से भक्ति करने की कोशिश कर रहे हैं। वैशिष्ट्यलिप्सु है क्या? या ordinary गुरुजी की सेवा है या हम उससे भी बेवकूफ़ हैं, कि न गुरु का श्रवण-कीर्तन-स्मरण की, गुरु की सेवा..., न भगवान् का श्रवण, कीर्तन, अपने पत्नी और अपने बच्चों का ही और अपनी माँ का श्रवण, कीर्तन, स्मरण, वंदनम्, अर्चनम्, दास्यम्, साख्यम्, आत्म निवेदन- यह हम इनके लिए कर रहे हैं, तो यह 3rd class भक्ति है।

शास्त्रों में तो यही प्राप्त होता है कि भगवान् की विशेष-विशेष कृपा उनको प्राप्त होती है, जो वैशिष्ट्यलिप्सु सेवा में प्रवर्तक होते हैं। विशेष रूप से जो गुरु की सेवा को, गुरु को प्रसन्न करने की कोशिश, चेष्टा करते हैं। तो इससे क्या फ़ायदा होता है? इससे भी हमारा ही फ़ायदा है। हम technical level पर जब हम चीज़े समझेंगे न, तो उसको follow करने की desire भी strong होगी। अब यह बात क्यों करें, वैशिष्ट्यलिप्सु सेवा, हम को तो भगवान् की प्राप्ति करनी है, फिर गुरु कहाँ से बीच में आ गए? हाँ तो यह गुरु मंत्र, यह पहला मंत्र है सारे २४ मंत्रो में से। Dash गुरुदेवाय स्वाहा। २३ तो उसके बाद आएँगे। सिद्धि तो दूर की बात है, सीधे भी नहीं हो पाएँगे हम।

जीव गोस्वामी भक्ति संदर्भ में बताते हैं कि- हम सब लोग जो भक्ति नहीं कर पाते, advancement..., वो हमारे अनर्थों के कारण होता है। कई अनर्थ होते हैं जो कि अपने प्रयास से पार पा पाने बहुत मुश्किल होते हैं। जैसे पत्नी के प्रति आसक्ति, अपने calves / puppies / son, daughter के प्रति attachment, यह दुष्जय, बहुत दुष्कर होते हैं ये अनर्थों को पार पा पाना। धन के प्रति लोभ..., तो जब गुरुदेव की सेवा करते हैं सम्यक् रूप से, तो गुरुदेव की कृपा से दो चीज़े होती हैं। एक- तो उससे कृष्ण हम से अधिक प्रसन्न होते हैं। दो- हम उन अनर्थों को गुरु की कृपा से पार हो पाते हैं। ये उन भक्तों के साथ हैं जो वैशिष्ट्यलिप्सु सेवा में प्रवर्तित होते हैं।

तो मैंने भी सब चीज़ों को देख कर यही सोचा, जब शास्त्र, knowledge वगैरह है, तो knowledge का फ़ायदा ही क्या जब सही समय पर काम न आए। जब सही समय पर, अब यही है कि हाँ, अपने आप को मैं तो, भगवान् की कृपा रही, तो 'स्वाहा' कर चुका हूँ इसमें, मेरा तो जीवन इसी में ही रहेगा। हो चुका है 'स्वाहा', गुरुदेवाय स्वाहा। सम्यक् रूप से अर्पण, आहूति जा चुकी है।

"गुरु मुख पदम् वाक्य, चित्त ते करिया एक्य,
आर न करिह मने आशा।
श्रीगुरुचरणे रति, एइ से उत्तम गति,
जे प्रसादे पूरे सर्व आशा ।।"
(श्री श्री प्रेमभक्तिचन्द्रिका ४ - श्रील नरोत्तम ठाकुर महाशय)

मन से एक नहीं करना, चित्त से। चित्त से एक हो गया, तो कभी प्रश्न दूसरा नहीं उठ सकता। मन में एक बारी बात आती है, तो जा भी सकती है। *मने करिया एक्या* नहीं बोला गया। *'चित्त ते करिया एक्या'...*, चित्त में। हमें स्वप्न में भी कौन सी चीज़ें याद आती हैं? जो चित्त में होती हैं। तो स्वप्न में भी और कोई चीज़ याद नहीं आनी चाहिए। *"गुरु मुख पदम् वाक्य, चित्त ते करिया एक्या, आर न करिह मने आशा।।" चित्त से करिया एक्या, आर न करिया मने आशा।* और मन में कोई आशा न आए, न स्वप्न में, न जागृत अवस्था में, किसी भी अवस्था में। Dash गुरुदेवाय स्वाहा। मैं अपने आप को गुरुदेव की सेवा में नियुक्त करता हूँ।

भगवद् प्रसन्नता का मूल जो है, root जो है, वह गुरुदेव की प्रसन्नता ही होती है। सारे शास्त्र इस बात का अवलोकन करते हैं। और जब हम गुरु की प्रेममयी सेवा यहाँ नहीं कर सकते, तो वहाँ कहाँ से कर लेंगे? वहाँ कोई क्या switch on हो जाएगा वहाँ पर जाकर? चित्त को तो एक यहीं पर होना होगा न। सिद्धि तो यहीं पर होनी है, धाम में थोड़ी न सिद्धि होगी। सिद्धि होने के बाद धाम जाएँगे। वो बोलते हैं न कि, धाम में जाकर सिद्धि होगी, यह nonsense है। सिद्धि होने पर धाम जाएँगे।

सिद्धि क्या होती है? *"चित्त ते करिया एक्या।"* जितनी जल्दी कर लें। और हम सब independent हैं, जितना जल्दी चाहें कर सकते हैं। कोई मनाई नहीं है।

भगवद् कृपा के दो प्रवाह होते हैं। भगवद् कृपा हमारे ऊपर दो रूप से बरसती है। एक श्रीगुरु और दूसरा श्रीवैष्णव के माध्यम से। तो जब हम अपने आप को सम्यक् रूप से गुरु की सेवा में ही नहीं नियुक्त करते, अर्पण नहीं करते, तो वैष्णवों की सेवा में कहाँ से करेंगे? हो ही नहीं सकता, त्रिकाल में संभव नहीं है। कहाँ से होगा, बता दो।

"आचार्य मां विजानीयान्नावमन्येत कर्हिचित्।
न मर्त्यबुद्ध्यासूयेत सर्वदेवमयो गुरुः।।"
(श्रीमद् भागवतम्-११.१७.१७)

जो हमारे भगवान् से संबंध सूत्र हैं, कौन हैं हमारे भगवान् से संबंध सूत्र? गुरु। मंत्रों के द्वारा हमारा संबंध भगवान् से हो रहा है। जो हमारा भगवान् से संबंध सूत्र हैं, हम उन्हीं की सेवा नहीं करने में रुचि, तो वैष्णव की सेवा कहाँ से करेंगे? यह बोलने की बात है, हमें वैष्णव सेवा करना है। बोलने से हो जाएगा क्या? Check कर लें, मैं गुरु सेवा में कितना sincere हूँ, answer मिल जाए, फिर मैं वैष्णव सेवा में कितना होऊँगा। और आचार्यगण कहते हैं, कि जब तक हम विष्णु और वैष्णवों को serve नहीं करेंगे हृदय से, तब तक हमारी enjoying mentality ही नहीं जाएगी। हम सब में enjoying mentality है। कैसे जाएगी? जब हम वैष्णवों को serve करेंगे। वैष्णवों को serve कैसे करेंगे, जब गुरु को ही गुरुदेवाय स्वाहा नहीं हो रहा। गुरुदेवाय स्वाहा तो होना पड़ेगा, वो भी सम्यक् रूप से, तो वैष्णव की सेवा का प्रश्न उठ सकता है। गुरुदेवाय स्वाहा का मतलब है- हे गुरु, हे गौरांग, this life is Yours...

"यार यैछे नचाए, तार तैछे करे नृत्य"

एकदम clear होना चाहिए।

You want me to go –

2 steps back...
Ok !
5 steps forward...
Ok !
4 steps left...
Fine !
4 steps right...
Fine !

"K.L.I.M गुरुदेवाय स्वाहा"

और जब हमें पता चल चुका है कि गुरुदेव, सद्गुरु की प्राप्ति ही destination है, तो आगे, आगे क्यों देख रहे हैं हम कुछ और? जब हमें जीवन की गति पता चल चुकी है, destination पता चल चुका है, तो हम आगे क्यों देख रहे हैं? आगे देखने का प्रश्न ही नहीं उठता। यह destination है और यही journey भी है।

गुरुदेव की सेवा ही destination है और गुरुदेव की सेवा ही journey है।
Journey और destination एक है।
साधना और साध्य एक है।

साध्य क्या है? गुरु गौरांग की सेवा। और साध्य means destination... साधना क्या है? Same है, कुछ भेद नहीं है। तो technically हम लोग understand करें सब चीज़ों को कि क्या सही है और क्या गलत है। तो यह समस्त सिद्धि का मूल है यह। समस्त साधना की सिद्धि का यह मूल है।

"विशेषतः सेवां कुर्य्यात्"

(भक्ति सन्दर्भ)

यह है विशेष सेवा। *"विशेषतः सेवां कुर्य्यात्"*।

एक होती है ordinary सेवा। अगर हम भगवान् की विशेष कृपा पात्र बनना चाहते हैं, तो गुरु की विशेष सेवा करें। हमें विश्वास होना चाहिए-

"श्रीगुरु चरण पदम् केवल भक्ति सदम्
वन्दो मुइ सावधान मते।
जहार प्रसादे भाइ, ए भव तरिया जाइ,
कृष्णप्राप्ति हय जाहा हते।।"

(श्री श्री प्रेमभक्तिचन्द्रिका ३-श्रील नरोत्तम ठाकुर महाशय)

हमारे मन में यह प्रश्न उठ सकता है, कि मैं तो गुरुदेव को सम्यक् रुप से अर्पण नहीं हूँ और न कर रहा हूँ इत्यादि। तो इसकी बड़ी सीधी सी बात है, कि हम भक्ति में serious नहीं हैं। हम भक्ति में serious हों, तो पता चल गया न जब destination आ गई, इसके परे कुछ है नहीं, तो अपने आप उन्हीं की सेवा में पूरा दिन-रात नियुक्त रहेंगे न। तो अगर हम नहीं नियुक्त हो रहे, तो straight forward मतलब है, दो टुकी बात, हम भक्ति में serious ही नहीं हैं। हम यही विलासिता ही करना चाहते हैं। Sense gratification, gross ले लो या subtle ले लो। जो sincere है वह फाल्तू न करेगा न कुछ..., उसको पता है जो मिल गया इसके आगे गति ही नहीं है। इसके ऊपर कुछ है ही नहीं। इसके आगे कुछ नहीं है। जब गुरुदेव की प्राप्ति हो गई, तो इसके आगे कुछ नहीं है, अब तो सिर्फ़ ऊपर जाना हो। चरण मिल गए, चलो ऊपर चलें। हम

इधर-उधर जा रहे हैं, भटक रहे हैं, left-right...। भटकने की कोई ज़रूरत नहीं है। तो मिल गया न जो मिलना था। यही तो चाहते थे। जो चाहते थे, वो मिल गया, अब कहाँ भागना। जो आप चाहते हो, वह आपको मिल गया, तो भाग क्यों रहे हो? भागते किसलिए हैं हम? जो चाहते हैं वह मिल जाए, तो वो मिल गया। *"ये प्रसादे पूरे सर्व आशा"।* हम सारी आशाएँ करते हैं, तो उस आशा से आनंद..., अब उनकी कृपा से आपकी सारी आशा पूरी होंगी।

और इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि गुरु शारीरिक रूप से present हैं या नहीं हैं। Connection की कोई, कोई दिक्कत नहीं है क्योंकि गुरु जो होते हैं, अपनी समाधि में भी नित्य निवास करते हैं। गुरुदेव का यह जो शरीर है, वह भी सच्चिदानंदमय है। वह भी सच्चिदानंद है, eternal है, मालूम है? जो ८६ वर्ष का शरीर देख रहे हो, यह भी eternal है, सच्चिदानंद है। देखने में लग रहा है पेशाब निकलता है इसमें से, खून निकलता है। वो सच्चिदानंद है। जब हम हृदय से चित्त एक होगा, तो यही गुरुदेव हमें दर्शन देंगे बार-बार। यही गुरुदेव हमें guide भी करेंगे, instruct भी करेंगे, सब कुछ करेंगे, दूर नहीं हैं।

Life को simple रखें। पहले मंत्र की सिद्धि करें। सब कुछ स्पष्ट हो चुका है। अब तो पहले मंत्र के संबंध में और अपना जीवन सफल करने की कोशिश करें।

जैसे की दो प्रकार से होता है, एक तो primary होता है भगवान् का श्रवण, कीर्तन, अध्ययन, अर्चन वगैरह-वगैरह। और गुरु को ठीक है मिल लिया, मिल लिया ! सेवा कर ली, कर ली ! ऐसा कुछ direct सेवा-वेवा कुछ नहीं है। एक होता है गुरु की सेवा ही primary focus है; secondary focus है, यह वाला साधना। सबसे ज़्यादा लाभ तो वैशिष्ट्यलिप्सु सेवा से ही मिलता है।

भगवान् की Special Grace जो होती है, actually serving Guru and Vaiṣṇavas is serving The direct Grace of The Lord... This is The direct Grace of The Lord... What is The direct Grace...? Guru and Vaiṣṇava. Serving them means serving The direct Grace of The Lord. बोलते हैं His Grace, बोलते रहतें हैं His Grace Prabhujī... His Grace क्या होता है? वही तो होता है। His Grace, किसकी Grace? क्या अपने पिताजी की Grace? घर की Grace? नहीं। His Grace..., *"एको गोपाल"*, उन्हीं की Grace..., Grace तो हमेशा ही divine होती है। शब्द ही गलत है..., उटपटांग। खाली divine वाला Grace है? वह बिना divine के..., Divine ही होती है grace भाई !

क्या बोलेंगे? His Material Grace? यह तो होता ही नहीं है। Grace तो divine होगा हमेशा।

Serving Guru and all Vaiṣṇavas means,
Serving The direct Grace of The Lord...

यही तो भगवान् की दो कृपा के प्रवाह हैं -- 'गुरु और वैष्णव'। वास्तविक गुरु हमें वैष्णवों की सेवा में नियुक्त करेंगे हमेशा। और वास्तविक वैष्णव हमें गुरु की सेवा में। और दोनों में से दोनों ज़्यादातर गलत होती हैं। जो गुरु होते हैं, वे वैष्णव सेवा में नियुक्त नहीं होने देते, और जो वैष्णव होते हैं वे गुरु की सेवा में नियुक्त नहीं होने देते, यह जानना चाहिए कि न वे गुरु हैं न वे वैष्णव हैं फिर। वास्तविक वैष्णव की पहचान है वह आपको हमेशा गुरु की सेवा में नियुक्त करेगा। वास्तविक गुरु की पहचान है वे आपको हमेशा वैष्णव की सेवा में नियुक्त करेंगे। तो जो भी संग कर रहे हैं, प्राकृत भक्तों का संग कर रहे होते हैं सामान्यतः, तो हमें देखना चाहिए, यह दोनों एक दूसरे के बिना पूर्ति, पूरी नहीं होगी।

वास्तव में गुरु की कृपा, गुरु की कोई Instruction वगैरह मिल रही है, तो यह तो हमें एक बेल..., बेल मिल रही है जिससे..., we can go to a Spiritual World... एक माध्यम मिल रहा है..., कुछ तो मिला, कुछ तो मिला। कुछ भी नहीं मिलना था। ऐसे ही हवा में ही हम कुछ पकड़ में आ जाए ऐसे ही। यह साधना का क्या मतलब है? कुछ तो पकड़ में आ जाए कैसे। Clear है, यह लो पकड़ो, चलो। यह मिली चलो, किसी को यह बेल मिली, किसी को वह मिली, किसी को वह मिला, चलो।

"गुरु कृष्ण रूप हन शास्त्रेर प्रमाणे।
गुरु रूपे कृष्ण कृपा करेन भक्तगणे"
(श्री श्री चैतन्य चरितामृत आदि लीला १.४५)

"गुरु रूपेण कृष्ण कृपा", कृष्ण कृपा करते हैं भक्तगणे। तो भक्ति के ६४ अंग हैं, भक्ति के, उसमें से एक अंग है, हैरानगी होगी सुन कर कि ६४ अंग में से एक अंग है - निंदा न सुनना। We should never hear criticism of Guru and Vaiṣṇavas... और हम अपने आप को इसमें, यह सुनने में बड़ी simple बात लग रही है और हमने सौ (१००) बारी सुनी है। हम सुनते भी हैं उसके बावजूद भी निंदा सुनते हैं। क्योंकि हम बहुत बुद्धिमान्..., सुन लेता हूँ, मैं उसके बाद निर्णय कर लूँगा। बोल रहे हैं, नहीं सुनने की

ज़रूरत नहीं है, तुम बुद्ध हो, मत सुनना। सुनोगे तो जो तुम्हारी श्रद्धा सदियों में develop हुई है, वह uproot होने में एक second लगेगा। मैंने ऐसे disasters कई होते हुए देखे हैं। देखने में simple लग रही हैं। मेरा तो but फ़र्ज है कि caution कर सकते हैं कि ऐसा हो सकता है। Force नहीं कर सकते, करना भी नहीं चाहिए, भगवान् भी नहीं करते। पर न सुनें हम, बिल्कुल भी न सुनें हम। मत समझें कि हम बुद्धिमान् हैं, सुन के मैं निर्णय निकाल लूँगा, नहीं मैं उसको ठीक करूँगा। आप अपने आप को ही ठीक कर लो अभी। जब आपको इतना बड़ा ऊँचा कार्य के लिए योग्य समझा जाएगा, तो गुरु अंदर से भीतर से निर्देश दे देंगे कि हाँ आप ऐसे कर लो कार्य। Don't play with fire, Guru के साथ, fire के समान होगा।

We should be very particular, कोई भी loose comment न करें। Mind, body, words... dash K.L.I.M Gurudevāya Svāhā..., इसमें गुरुदेवाय स्वाहा नहीं हुआ कुछ भी। इसमें मेरा इन्द्रीय तृप्ति स्वाहा हुई।

गुरु तो वास्तव में, गुरुजी तो भगवान् का ही स्वरूप होते हैं। तो जब यह सोचना चाहिए की अगर गुरु से अगर हम inspired नहीं होंगे, जब ये इतने अच्छे हैं, तो वे कितने अच्छे होंगे। ये तो एक कण हैं न, सोने की खान में से एक कण जब ऐसा है, वे तो विभु, ये जब अणु में अगर ऐसी सुन्दरता हो सकती है, गुणों के अन्दर; जो विभु हैं, वे कितना विभु सौन्दर्य होगा। कितना विभु गुणशाली होगा- भगवान्, राधारानी और वे..., राधारानी कितनी होंगी, वे विभु गुणशाली को भी..., मदन मोहन को भी मदन मोहन मोहिनी। तो ऐसी गुणशालिनी की सेवा प्राप्ति चाहते हैं हम।

तो राधा-कृष्ण की ही हर समय लालसा होनी चाहिए, कि राधा-कृष्ण की सेवा प्राप्ति की। हाँ, अपनी स्थिति को देखते हुए हम गुरु की वैशिष्ट्यलिप्सु सेवा कर सकते हैं। Lets keep it simple, no complications...!

Cause of..., root cause of offences..., अशास्त्रीय श्रद्धा। Offences तो करोगे गुरु के प्रति, शिक्षा गुरु हो या दीक्षा गुरु, दोनों के प्रति offence करेंगे, उटपटांग कुतर्क सुनते ही। करेंगे या नहीं करेंगे? अशास्त्रीय श्रद्धा, root cause of offences... शास्त्र में एक पैसे का मालूम नहीं है।

मंद सुमंद मध्यो। एक तो व्यक्ति वैसे ही बुद्ध है, ऊपर से मंद भाग्य। यह भाग्य और भी खराब हो जाए। वैसे ही बुद्धि नहीं है, उस पर और दुर्भाग्य का वह attack हो जाए। यह कलियुग का लक्षण है।

यह तो बहुत बड़े भाग्य की बात है कि अगर हमारा कोई प्रश्न हो और उसका हमें शास्त्रीय उत्तर मिल जाए। यह इतने बड़े भाग्य की बात है कि आप कल्पना भी नहीं कर सकते। शास्त्रीय उत्तर प्राप्त होना लगभग असंभव है। लगभग असंभव है पूरे planet पर। शास्त्रीय उत्तर प्राप्त होना almost असंभव है। By chance हमें कुछ, कृपा हो जाए भगवान् की कहीं से, तो अपने आप को संसार का सबसे सौभाग्यशाली व्यक्ति मानना चाहिए। सारे चीज़ों का समाधान किस से होता है? शास्त्र से। और शास्त्रीय उत्तर मिलना, या तो हम पढ़ें सारे शास्त्र। पढ़ें तो ठीक है कोशिश तो कर रहे हैं पर, but it will take at least..., at least a decade... कुछ थोड़ा understanding ठीक होने के लिए। If we are serious in bhakti, तब will take a decade..., if we were like... शास्त्रीय उत्तर अगर नहीं मिलेगा और हम किसी से चर्चा करेंगे तो हमारी life ruin हो जाएगी।

यही था..., इस संबंध में कोई प्रश्न पूछना चाहते हैं?